श्रीगोगानवमी - गोगामेड़ी-दर्शन

(भाद्रपद कृष्ण नवमी)

श्रीमती अंजना शर्मा
प्रबन्धक
देव स्थान विभाग, जयपुर

भाद्रपद श्रीकृष्णाष्टमी के दूसरे दिन की पुण्यतिथि नवमी ही 'श्रीगोगानवमी' नाम से प्रसिद्ध है। इसी तिथि को श्रीजाहरवीर गोगाजी का जन्मोत्सव श्रद्धालु भक्तों द्वारा अपार भक्ति-भाव से मनाया जाता है। इस अवसर पर बाबा जाहरवीर गोगाजी के भक्तगण अपने घरों में निज इष्टदेव की थाड़ी (थान-वेदी) बनाकर अखण्डज्योति जागरण कराते हैं तथा परम्परागत अपने पुरोहित नाथ योगियों द्वारा डौंरू सारंगी की ध्वनि के साथ जाहरवीर की शौर्य गाथा एवं जन्म कथा श्रवण करते हैं। इस प्रथा को जाहरवीर की जीत-कथा-जागरण कहा जाता है। प्रान्तीय मान्यताओं के अनुसार श्रीगोगाजी महाराज को जाहरवीर, गोगावीर, गुगालवीर, गोगागों एवं जाहरजहरी नाम से भी पुकारा जाता है।

आपकी जन्मस्थली राजस्थान के 'चूरू' जनपद में 'ददरेबा' नाम से तथा पूजास्थली समाधि-मन्दिर 'गोगामेड़ी' नाम से प्रसिद्ध है। जो तहसील भादरा, जनपद गङ्गानगर के सन्निकट स्थित है।

बाबाश्री की पूजा सामग्री में लौंग, जायफल, कर्पूर, गुग्गुल और गो-घृत विशेषरूप से प्रचलित हैं। चूंकि श्रीगोगाजी का शुभ वाहन नीलवर्ण का घोड़ा रहा है। सम्भवतः इसी कारण बाबा के नीलाश्व को प्रसन्न करने की कामना से उनके भोग प्रसाद में हरी दूब एवं चने की दाल समर्पित को जाती है और चन्दन-चूरा बाबा की समाधि पर मला जाता है। श्रीगोगाजी के प्रादुर्भाव की कथा नाथ सम्प्रदाय के योगपन्थ से मिली हुई है। योगी गोरक्षनाथ ने ही आपकी माता बाछल को उनकी पूजा-अर्चना-तपस्या से प्रसन्न होकर प्रसादरूप में अभिमन्त्रित गुग्गुल प्रदान किया था। जिसके प्रभाव से पाँच बन्ध्या माताओं ने पाँच पुत्रों (वीरों)को जन्म दिया था। क्रमशः महारानी बाछल से जाहरवीर गोगाजी, पुरोहितानी से नरसिंह पाण्डे, दासी से मनुवीर, महतरानी से रत्नावीर तथा बन्ध्या घोड़ी से नीलाश्व वीर का प्रादुर्भाव हुआ। ये पाँचों वीर अपूर्व चमत्कारी तथा असाधारण व्यक्तित्वधारी थे। इन वीरों का सनातनधर्म एवं गौरक्षार्थ यवन राजाओं से संग्राम हुआ जिसमें श्रीगोगाजी एवं नीलाश्व को छोड़कर रत्ना एवं मनुवीर वीरगति को प्राप्त हुए। अन्त में गुरु गोरक्षनाथके योग, मन्त्र, प्रभाव एवं प्रेरणा से प्रेरित होकर श्रीजाहरवीर गोगाजी ने नीले घोड़े सहित धरती में जीवित समाधि लेकर अमर बलिदान की धर्मध्वजा फहरायी।

समाधि के पश्चात् वीर गोगाजी ने प्रकट होकर कितनी ही बार भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण की हैं और आज भी भक्तों की मान्यताओं एवं विश्वास के अनुसार वे प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्षरूप से भक्तों का मार्गदर्शन करते हैं और उनके विश्वास को जगाते हैं। इसी कारण गोगाजी को प्रकटवीर (जाहरवीर) कहा जाता है।

बागड़-दर्शन एवं यात्रा

भाद्रपद कृष्ण पञ्चमी को भारत के अनेक प्रान्तों से भक्तगण अपने गाँव, नगर एवं शहरों से अपने-अपने कुलगुरु (नाथयोगियों) द्वारा पथवारी माता का विधिवत् पूजन कराकर सपरिवार पीले वस्त्र धारण करके नगर- परिक्रमा करते हुए बागड़-दर्शन हेतु प्रस्थान करते हैं।

प्रातः गोगानवमी के दिन गोरखटीले के समक्ष करीब डेढ़ कि०मी० की दूरीपर स्थित समाधि मन्दिर गोगामेड़ी के लिये प्रस्थान किया जाता है। इस प्राचीन मन्दिर के अंदर वीर गोगाजी की अमर समाधि है। इस समाधि पर भक्तगण अटूट श्रद्धाभाव से परिक्रमा करते हुए अपने दोनों हाथों से चन्दन-चूरे का मर्दन करते हैं। यह तो रहा राजस्थान का बागड़-दर्शन मेला।

इसके इतर हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों में भी श्रीगोगाजी के मेलों का क्रम बना ही रहता है। यथा- जनपद सहारनपुर में गुगालवीर का मेला, जागल में गोगावीर का मेला, बिजनौर के चाँदपुर- दारानगरगंज में छड़ियों का मेला, नैनीताल रामनगर में जहानाबाद का जाहरवीर की छड़ियों का मेला। इसी प्रकार मथुरा, आगरा, झाँसी, फर्रुखाबाद, भोलेपुर, एटा 'रघुनाथपुर गद्दी' पर जाहरवीर गोगा दिवान का मेला भी प्रचलित है।

यात्रा के पश्चात् यात्रीगणों का निज-निज नगरों में आगमन होता है। पुनः पथवारी-पूजन के पश्चात् वे गृहप्रवेश करते हैं तथा गीत-मङ्गलादि और माता के छन्दों का गायन-वादन होता है, पास-पड़ोस एवं गृह-कुटुम्बियों को प्रसाद वितरण कर एक-दूसरे के गले मिलते हैं और अपने-आपको कृतकृत्य एवं धन्य समझते हैं।